अतिरिक्त भाग

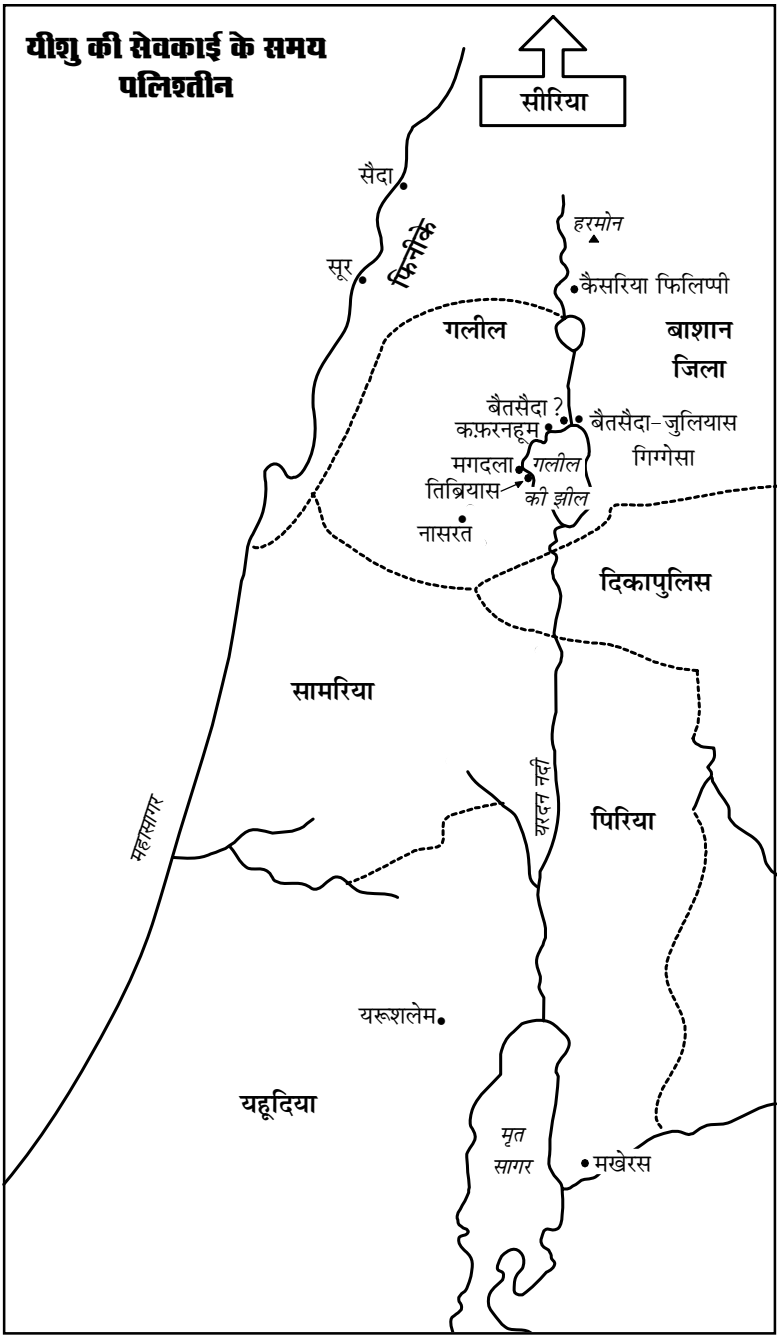
यीशु की सेवकाई के समय
पलिश्तीन
सीरिया
सैदा
सूर
फिनीके
हरमोन
कैसरिया फिलिप्पी
गलील
बाशान
जिला
बैतसैदा ?
कफ़रनहूम
बैतसैदा-जुलियास
गिग्गेसा
मगदला
गलील
तिबिरियास
की झील
नासरत
दिकापुलिस
सामरिया
महासागर
यरदन नदी
पिरिया
यरूशलेम
यहूदिया
मृत
सागर
मखेरस

यीशु के आश्चर्यकर्म

	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
पानी का मय बनाना				2:1-11
कफ़रनहूम में दुष्टात्मा को निकालना		1:23-26	4:33-35	
पतरस की सास को चंगा करना	8:14-17	1:29-31	4:38, 39	
आश्चर्यकर्म से मछलियां पकड़वाना			5:1-11	
एक कोढ़ी को चंगा करना	8:2-4	1:40-45	5:12-16	
लकवे के रोगी को चंगा करना	9:1-8	2:1-12	5:17-26	
सूखे हाथ वाले आदमी को चंगा करना	12:10-13	3:1-5	6:6-11	
सूबेदार के सेवक को चंगा करना	8:5-13		7:1-10	
विधवा के पुत्र को जिलाना			7:11-17	
तूफ़ान को शान्त करना	8:23-27	4:37-41	8:22-25	
दुष्टात्मा से ग्रस्त गदरेनियों को चंगा करना	8:28-34	5:1-20	8:26-39	
लहू बहने वाली स्त्री को चंगा करना और लाज़र की बेटी को जिलाना	9:18-26	5:21-43	8:40-56	
दो अन्धों को चंगा करना	9:27-31			
एक गूंगे को चंगा करना	9:32, 33			
अधिकारी के पुत्र को चंगा करना				4:46-54
एक अपाहिज आदमी को चंगा करना				5:1-9

	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
पांच हज़ार को खिलाना	14:15-21	6:35-44	9:10-17	6:1-14
पानी पर चलना	14:25-33	6:48-52		6:16-21
चार हज़ार को खिलाना	15:32-39	8:1-9		
मछली के मुंह से कर चुकाने के लिए सिक्का	17:24-27			
एक दुष्टात्मा को निकालना	12:22, 23		11:14	
कनानी स्त्री की लड़की को चंगा करना	15:21-28	7:24-30		
एक बहरे को चंगा करना		7:31-37		
एक अन्धे को चंगा करना		8:22-26		
दुष्टात्मा से ग्रस्त एक लड़के को चंगा करना	17:14-18	9:14-29	9:37-43	
एक कुबड़ी औरत को चंगा करना			13:11-17	
जलंधर के एक रोगी को चंगा करना			14:1-6	
दस कोढ़ियों को चंगा करना			17:11-19	
अन्धे जन्मे एक आदमी को चंगा करना				9:1-7
लाज़र को जिलाना				11:1-45
दो अन्धों को चंगा करना	20:29-34	10:46-52	18:35-43	
अंजीर के पेड़ को श्राप देना	21:18-22	11:12-14		
मलखुस का कान ठीक करना			22:50, 51	
आश्चर्यकर्म से मछलियां पकड़वाना				21:1-14

जब फरीसियों ने ठोकर खाई

(मत्ती 15:12-14)

यीशु ने फरीसियों को बताया कि उन्होंने अपनी परम्परा से परमेश्वर की आज्ञा को नकार दिया था (मत्ती 15:3-6)। उसने उन्हें वे ''कपटी'' कहा, जिनकी यशायाह भविष्यवक्ता ने निन्दा की थी (मत्ती 15:7-9)। बाद में जब वह और उसके चेले भीड़ में से चले गए (मरकुस 7:17), तो उन्होंने उससे पूछा कि, ''क्या तू जानता है कि फरीसियों ने यह वचन सुनकर ठोकर खाई है?'' (मत्ती 15:12)। मैं कल्पना करता हूं कि यह एक अल्पवक्तव्य था, क्योंकि धार्मिक अगुवे क्रोध में होंगे!

बाइबल सिखाती है कि, साधारणतया हमें दूसरों को ठोकर खिलाने से बचना चाहिए (देखें मत्ती 17:27; 18:6; रोमियों 14:21; 1 कुरिन्थियों 8:13)।[1] परन्तु कई बार जैसे यहूदियों ने यीशु की बात को लिया, वैसे ही हम कुछ कहें या करें लोगों को ठोकर लग ही जाएगी (मत्ती 13:57; मरकुस 6:3)। यह जानते हुए कि मनुष्य के मन में क्या है (यूहन्ना 2:24, 25), यीशु ने फरीसियों के मन को देख और समझ लिया कि उनकी घृणा कम नहीं होगी। उन्हें कही गई उसकी बातें सुनने वालों के लाभ के लिए थीं, जिससे उन कपटी शिक्षकों के प्रभाव से लोग चौकस हो जाएं (मत्ती 16:6, 12)। क्या यीशु की स्पष्टवादिता का उदाहरण हमें अपनी शिक्षा में ठोकर खिलाने वाले होने का अधिकार देता है? नहीं, आप और मैं लोगों के मनों को न तो जानते हैं और न ही जान सकते हैं। हमें लोगों से ''प्रेम में सच्चाई से'' बोलने का प्रयास करते रहना चाहिए (इफिसियों 4:15)।

मसीह को फरीसियों को ठोकर खिलाने की अधिक चिन्ता नहीं होगी, परन्तु उसके चेलों को थी। उन्हें आरम्भ से ही अपने विद्वानों का सम्मान करना सिखाया गया था। इसके अलावा वे जानते थे कि इन अगुओं का कितना प्रभाव था और यदि वे उनका विरोध जारी रखते हैं तो इससे प्रभु और उनके लिए कितने विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं।

प्रभु ने अपने अनुयायियों को सांत्वना देने में जल्दी की। उसने कहा, ''हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा'' (मत्ती 15:13)। क्या ''पौधा'' फरीसियों द्वारा सिखाई गई मनुष्यों की परम्पराओं, उस शिक्षा को देने वालों या उनकी शिक्षाओं के आधार पर फरीसियों के प्रबन्ध को कहा गया है? इसका सही उत्तर है ''सबके लिए है।'' परमेश्वर ने व्यवस्था की शिक्षाओं का ''पौधा लगाया'' था, परन्तु उसने फरीसियों की

परम्पराओं का ''पौधा'' नहीं लगाया था। इसी तरह बाग में जंगली बीज ने अच्छे पौधों को दबा लिया था, सो मनुष्यों की परम्पराएं लोगों के मनों तथा जीवनों से वचन को चुरा लेती थीं (मत्ती 15:3, 6, 9)। जिस प्रकार एक सचेत माली अपने बाग से जंगली बीज को निकाल देता है, वैसे ही, अन्त में परमेश्वर झूठे शिक्षकों तथा झूठी शिक्षाओं को जड़ से उखाड़कर फैंक देगा।

इस प्रकार मसीह ने अपने परेशान प्रेरितों से कहा, ''उन [फरीसियों] को जाने दो'' (मत्ती 15:14क)। वह यह नहीं सिखा रहा था कि उसके अनुयायियों को उनकी गलत शिक्षा को कभी चुनौती न देने और उनकी गलती को सामने न लाने के अर्थ में ''जाने देना'' चाहिए। इससे तो उसकी अपनी बातें ही उसके काम के विपरीत हो जातीं (देखें मत्ती 23)। बल्कि वह कह रहा था कि ''उनके क्रोध पर ध्यान न दो।''[2] द लिविंग बाइबल में है ''उन्हें नज़रअन्दाज कर दो।''

यीशु ने उन्हें फरीसियों के क्रोध से भयभीत न होने का एक कारण दिया था, क्योंकि अन्ततः परमेश्वर ने उन्हें सम्भाल लेना था। अब उसने उन्हें एक और कारण बताया: ''वे अन्धे मार्ग दिखाने वाले हैं:[3] और अन्धा यदि अन्धे को मार्ग दिखाए तो दोनों[4] गड्ढे में गिर पड़ेंगे'' (मत्ती 15:14ख)। फरीसी लोग पूर्वधारणा, घमण्ड और स्वार्थ से अन्धे हो गए थे। अन्ततः उनका अन्धापन उनके ही विनाश का कारण बनना था।

यानि कि मसीह अपने चेलों को बता रहा था कि वे ''सूख रहे पौधों'' और ''मार्ग दिखाने वाले अन्धों'' को सच्चाई पर चलने और सही शिक्षा देने में रुकावट न बनने दें। यही शिक्षा हमारे लिए भी है कि हमें शत्रु बनने के लिए अपने मार्ग से भटकना तो नहीं चाहिए, परन्तु विरोध को हमें निराशा की अनुमति भी नहीं देनी चाहिए।

टिप्पणियां

[1]यूनानी शब्द के अनुवाद ''ठोकर'' के कई अर्थ हो सकते हैं, जिसमें ''ठोकर दिलाना'' शामिल है। इस पद में दी गई आयतों का अंग्रेज़ी का NASB संस्करण पढ़ें। चर्चा के लिए, मैं ''क्रोध दिलाना या किसी दूसरे को नाराज करना'' सहित *सभी* सम्भावित अर्थ शामिल कर रहा हूं। [2]इस वाक्य की तुलना भजन संहिता 37:1, 2 से करें। [3]मत्ती 23:16, 17, 19 पढ़ें। [4]यह पद सिखाता है कि झूठी शिक्षा को मानने वाले भी उतने ही ज़िम्मेदार हैं, जितने झूठी शिक्षा देने वाले।

यीशु की सीमित आज्ञा पर नोट्स

मत्ती 10:9, 10क: ''अपने *पटुकों* में न सोना और न रुपया और न तांबा रखना। मार्ग के लिए न *झोली* रखो।'' ''पटुकों'' शब्द ''कमरबन्द'' अर्थात कमर पर बांधने वाली चमड़े या कपड़े की पेटी के लिए यूनानी शब्द से अनुवाद किया गया है। कई बार सफ़र के दौरान धन को इन पटुकों में छुपाया जाता था (देखें मरकुस 6:8), सो ''पटुके'' का अर्थ पता चल जाता है। ''झोली'' कंधे पर लटकाने वाले थैले को कहते थे, जिसमें सफ़र में काम आने वाला सामान रखा जाता था। इसकी तुलना बिस्तरबन्द या पिट्ठू बैग से की जा सकती है। प्रेरितों ने अपने पास कोई सामान नहीं रखना था, इसलिए उन्हें ऐसे थैलों की आवश्यकता नहीं होनी थी।

मरकुस 6:10: यीशु ने कहा, ''जहां कहीं तुम किसी घर में उतरो तो जब तक वहां से विदा न हो, तब तक उसी में ठहरे रहो'' (देखें मत्ती 10:11; लूका 9:4)। किसी के घर में प्रवेश करने और बाहर जाने के समय होने वाले समारोह सामान्यतया काफ़ी देर तक चलते थे (देखें लूका 7:44-46)। हर नगर में एक से अधिक घरों में ठहरने का अर्थ प्रेरितों के काम का समय उसी में गंवाना था।

मत्ती 10:12, 13: ''और घर में प्रवेश करते हुए उसे आशीष देना। यदि उस घर के लोग योग्य होंगे तो *तुम्हारा कल्याण* उन पर पहुंचेगा; परन्तु यदि वे योग्य न हों तो तुम्हारे पास लौट आएगा।'' किसी घर में प्रवेश करने पर सामान्यतया अभिवादन करने के लिए ''इस घर की शान्ति हो'' या सलाम ही कहा जाता था। परन्तु यदि घर के लोग प्रेरितों के संदेश को ठुकरा देते तो इसका अर्थ था कि उन्होंने उस अभिवादन में दी गई ''शान्ति'' स्वीकार नहीं की थी (देखें आयतें 14, 15)।

मत्ती 10:14: ''और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे, और तुम्हारी बातें न सुने, उस घर या उस नगर से निकलते हुए अपने *पांवों की धूल झाड़ डालो*'' (देखें मरकुस 6:11; लूका 9:5)। यहूदी लोगों का विश्वास था कि अविश्वासी अन्यजातियों द्वारा छुई गई कोई भी वस्तु ''अशुद्ध'' हो जाती है। इसलिए किसी अन्यजाति देश में जाकर आने के बाद पलिश्तीन में लौटकर वे अन्यजातियों की दूषित धूल अपने पांवों से झाड़ देते थे। यीशु द्वारा सांकेतिक कार्य करने की आज्ञा इस बात का संकेत था कि विश्वास न करने वाले यहूदी भी अविश्वासी अन्यजातियों से भले नहीं थे।

मत्ती 10:17: ''... लोगों से सावधान रहो। ज़्योंकि वे ... *अपनी पंचायतों में तुम्हें कोड़े मारेंगे।''* आराधनालयों में अनुशासन का उग्र रूप कोड़े मारना (पिटाई करना, चाबुक मारना) होता था। यह काम ''सहायक'' द्वारा किया जाता था। (इस पुस्तक में ''ज़्या तुम्हें विश्वास है?'' और ''ठुकराए जाने का सामना कैसे करें'' पाठों में आराधनालय के सहायकों पर नोट्स देखें।)

मत्ती 10:23: ''... तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे, *कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा*।'' इसे ''इस अध्याय का सबसे कठिन पद'' माना जाता है,[1] मुज़्यत: इसलिए ज़्योंकि हमें ''आ जाएगा'' का अर्थ नहीं पता। ''आ'' शज़्द 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश के समय प्रभु के यहूदियों का न्याय करने के लिए आना हो सकता है; इससे इस पद का सज़्बन्ध आयत 15 से जुड़ जाएगा। यह सज़्भव है कि इस पद का अर्थ केवल यही है कि यीशु उनके पीछे उन्हीं नगरों में आ रहा था (देखें मत्ती 11:1)।[2]

मत्ती 10:25ख: ''जब उन्होंने *घर के स्वामी को शैतान कहा* ...।'' यह फरीसियों द्वारा लगाए गए निन्दापूर्वक आरोपों की बात थी कि यीशु शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है। (इस आरोप और यीशु के उज़र के बारे में टिप्पणियों के लिए ''मसीह का जीवन, भाग 2'' पुस्तक में 152 पर ''एक व्यस्त दिन'' पाठ देखें।)

मत्ती 10:26: ''सो उन से [जो तुम्हें सताते हैं] मत डरना। ज़्योंकि *कुछ ढंपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है,* जो जाना न जाएगा।'' ''ढंपा'' और ''छिपा'' कहकर यीशु सज़्भवतया उसे उसके प्रेरितों को और उनके काम को नष्ट करने की अपने शत्रुओं की योजनाओं की बात कर रहा था। द लिविंग बाइबल में इस वाज़्यांश को इस प्रकार लिखा गया है, ''उनके गुप्त षड्यन्त्र सार्वजनिक हो जाएंगे।'' यह प्रतिज्ञा पूरी हो गई थी; आज हमें नये नियम के पृष्ठों पर उनकी शैतानी योजनाओं के बारे में पढ़ने को मिलता है।

मत्ती 10:41, 42: ''जो भविष्यवज़्ता को भविष्यवज़्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यवज़्ता का बदला पाएगा; और *जो धर्मी जानकर धर्मी को ग्रहण करे, वह धर्मी का बदला पाएगा।* जो कोई *इन छोटों में से एक को* चेला जानकर केवल *एक कटोरा ठण्डा पानी पिलाए, मैं तुमसे सच कहता हूं, वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा।''* पहले यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि उसके प्रेरितों को ठुकराने वाला शापित होगा (आयतें 14, 15); यहां उसने प्रतिज्ञा की कि जो उनके संदेश को ग्रहण करे, वह आशीषित होगा। संदर्भ में, ''इन छोटों में से एक को'' सज़्भवतया प्रेरितों के लिए कहा गया है। यह समझना आवश्यक है कि उद्धार के केवल एक कारक का यहां पर विचार किया गया है: पानी का एक कटोरा देकर प्रेरितों को ग्रहण करने को दिखाना। शिक्षा यह नहीं है कि किसी एक कार्य (जैसे पानी पिलाना) से उद्धार सुनिश्चित हो जाएगा, बल्कि यह है कि हर बात का एक सा महत्व है, अर्थात चेलों को ग्रहण करने वाले ही उद्धार पाएंगे।[3]

मरकुस 6:12, 13: ''और उन्होंने जाकर प्रचार किया, ... और बहुत बीमारों पर *तेल मलकर* उन्हें चंगा किया।'' चंगाई के सज़्बन्ध में ''तेल मलकर'' (देखें याकूब 5:14) कुछ रहस्यमयी बात है। किसी पर तेल मलने के मूलत: तीन कारण होते थे: (1) इसका

समारोहिक उद्देश्य था–समारोह के रूप में (देखें निर्गमन 30:25, 26, 30; 1 शमूएल 9:16; 15:1; 16:13)। (2) इसका व्यावहारिक उद्देश्य था–अपने स्वास्थ्य के लिए (देखें रूत 3:3; 2 शमूएल 14:2)। इस सज़्बन्ध में, किसी दूसरे के सिर पर तेल मलना उसे ताज़गी देने वाला होता था (देखें लूका 7:46; इब्रानियों 1:9)। (3) इसका चिकित्सकीय उद्देश्य था–जैसे घावों के उपचार के लिए (देखें यशायाह 1:6; लूका 10:34); तेल मलने से घाव नर्म होकर सुरक्षित हो जाता था। चंगाई देने से पहले प्रेरितों ने जब लोगों पर तेल मला तो वे एक विशेष समारोह में ऐसा कर रहे थे? ज़्या वे अतिरिज़्त ताज़गी का स्पर्श दिखा रहे थे? ज़्या यह दवा के रूप में हो सकता है?[4] इसका कोई इतिहास नहीं है कि यीशु ने कभी किसी को चंगाई देने के लिए उस पर तेल मला हो, सज़्भवतया यह प्रक्रिया का आवश्यक भाग नहीं था। मसीह कई बार चंगाई के सज़्बन्ध में सांकेतिक कार्य करता था, जैसे पीड़ित व्यज़्ति का छूना, उसकी आंखों पर मिट्टी लगाना और इस तरह के काम जिनका अन्तिम उद्देश्य परिणामों अर्थात चंगाई के साथ कुछ सज़्बन्ध नहीं होता था। प्रेरितों का तेल मलना सज़्भवतया इसी श्रेणी में आता है।

टिप्पणियां

[1]विल एड वारेन, ज़्लास सिलेबस, *द लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट: द सिनोप्टिक गॉस्पल्स,* हार्डिंग यूनिवर्सिटी, 1991, 41. [2]कुछ लोग इसे वह प्रतिज्ञा मानते हैं कि यहूदियों में यीशु के दोबारा आने तक सुसमाचार का प्रचार होता रहेगा। ऐसी सकारात्मक प्रतिज्ञा संदर्भ के अनुकूल नहीं लगती। [3]यह समझना आवश्यक है कि हमारा उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से हुआ है (इफिसियों 2:8, 9)। [4]ऐसा लगता नहीं, ज़्योंकि प्रेरित आश्चर्यकर्मों के द्वारा लोगों को चंगा करते थे; पर यह सज़्भावना के क्षेत्र से परे नहीं है। आज की तरह ही यह तब भी सच था कि परमेश्वर हमारे लिए वह काम नहीं करता, जो हम अपने लिए स्वयं कर सकते हैं।